क्या सिन्धु सभ्यता के समय में कच्छ के रण में नौवहन होता था? पुरातात्विक साक्ष्यों पर आधारित एक अध्ययन

अनिरुद्ध सिंह गौर, कमलेश वोरा एवं सुन्दरेश

सी.एस.आई.आर. – राष्ट्रीय समुद्र विज्ञान संस्थान, दोना पावला, गोवा–403 004

सारांश

वर्तमान में कच्छ भारत के उन कठिन क्षेत्रों में शामिल है जहाँ पर जनसंख्या सबसे कम है। इसके प्रमुख कारण कठोर जलवायु, कम वर्षा तथा अनुपयुक्त कृषि योग्य भूमि हैं। पुरातात्विक अन्वेषण इसके विपरीत संकेत करते हैं कि शायद अतीत में कच्छ क्षेत्र में तुलनात्मक जनसंख्या अधिक रही होगी क्योंकि इस क्षेत्र में बड़ी संख्या में हड़प्पा सभ्यता कालीन पुरास्थलों की खोज की गई है। इस प्रकार प्रश्न उठता है कि, क्या उस समय यहां की भौगोलिक स्थिति भिन्न थी जिसके कारण जलवायु वर्तमान से अलग थी और मानव आवास के लिये उपयुक्त रही होगी। यद्यपि सिन्धु सभ्यता को कृषि प्रधान सभ्यता कहा जाता है परन्तु उसका विस्तार कच्छ में इस तथ्य की पुष्टि नहीं करता है क्योंकि इस क्षेत्र में कृषि योग्य भूमि नगण्य है। लेकिन यदि हम यह मानें जैसा कि अधिकतर विद्वानों का मत है कि, कच्छ का रण किसी समय में अरब सागर का विस्तरित भाग था, तो यह कहा जा सकता है कि उस समय की जलवायु मानव आवास के लिये वर्तमान से बेहतर रही होगी तथा कच्छ के विशाल तट पर स्थित हड़प्पा सभ्यता के नगरों के लिये नौवहन एवं अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार के लिये उपयुक्त रहा होता।

परिचय

भारतीय उपमहाद्वीप की अत्यन्त संपन्न प्राचीन सभ्यता, जिसे सिन्धु घाटी सभ्यता के नाम से जानते हैं, का विस्तार वर्तमान पाकिस्तान, पंजाब, हरियाणा, राजस्थान, पश्चिमी उत्तर प्रदेश, गुजरात एवं उत्तरी महाराष्ट्र तक था। गुजरात क्षेत्र, सिन्धु सभ्यता का समुद्री गतिविधियों में जैसे समुद्री संसाधनों के दोहन तथा अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार आदि के कारण अग्रणी रहा होगा। हालांकि कच्छ में स्थापित हड़प्पाकालीन पुरास्थल सिन्ध क्षेत्र से काफी साम्य रखते हैं लेकिन सौराष्ट्र से काफी अलग हैं, विशेषकर मृदपात्र प्रकारों में। इसलिये कुछ विद्वानों ने गुजरात हड़प्पा पुरास्थलों को सिन्धी हड़प्पा एवं सोरठ हड़प्पा में वर्गीकृत किया है (पोशेल, 2002)।

कच्छ, भारत की पश्चिमी सीमा को बनाता है और यह संसार का सबसे अनोखा भाग है जिसे कच्छ का रण कहते हैं । कच्छ का रण नमक के एक स्तर से ढँका बड़ा समतल क्षेत्र है जो समुद्रतल से कुछ सेंटीमीटर ऊपर ही है। इसका विस्तार पूर्व–पश्चिम में 300 किलोमीटर और उत्तर–दक्षिण में 150 किलोमीटर है। यह दो भागों में बँटा है–बड़ा रण जो उत्तर में है, 18000 वर्ग किलोमीटर में फैला है तथा छोटा रण जो दक्षिण–पूर्व में स्थित है, लगभग 5000 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में फैला हुआ है। बड़ा रण कोरी खाड़ी द्वारा अरब सागर से जुड़ा है, जबकि छोटा रण कच्छ की खाड़ी से प्रत्यक्ष रूप से जुड़ा हुआ है। मानसून के समय में कच्छ रण पानी द्वारा ढँका रहता है जबकि नवम्बर से मई तक रण सूखा रहता है। एक ग्रीक लेखक ने अपनी पुस्तक ‘‘पेरीप्लस आफ इरिथ्रियन सी’’ में लिखा है कि सिन्थुस नदी के बाद एक खाड़ी है जो उत्तर की ओर विस्तरित है, नौवाहन योग्य नहीं है और इसे इरियन नाम से जानते हैं। इसके दो भाग हैं जिन्हें छोटी एवं बड़ी खाड़ी नामों से जानते हैं। दोनों में पानी बहुत कम है और कई बार जहाज यहां पर फँस जाते हैं’’ (स्कॉफ, 1912)।

अठारहवीं एवं उन्नीसवीं सदी में ब्रिटिश सर्वेयरों ने कच्छ रण का विस्तार से वर्णन किया है और उन्होंने उन किवदंतियों का उल्लेख किया है जिनमें वर्तमान रण प्राचीन काल में अरब सागर का ही एक विस्तार था। तथा यह भी उल्लेख किया कि रण के दोनों किनारों पर कई बन्दरगाह थे। हड़प्पा काल में रण की भौगोलिक स्थिति के बारे में तीन प्रमुख धारणायें हैं। प्रथम यह कि रण समुद्र का एक भाग था; दूसरा कि यह सिन्धु एवं सरस्वती नदियों का डेल्टा रहा होगा; तथा तीसरा वर्तमान स्थिति ही हड़प्पा काल में भी थी।

प्रस्तुत लेख मे कच्छ में स्थित बड़ी संख्या में सिन्धु सभ्यता के आवासों का प्रमुख उद्देश्य एवं कच्छ की भूमिका पर विस्तार से चर्चा की गई है। यह अध्ययन हमारे द्वारा किये गये पुरातात्विक सर्वेक्षणों एवं अन्य विद्वानों द्वारा भूगर्भिक खोजों पर आधारित है। कच्छ रण की प्राचीन भौगोलिक स्थिति को रेखांकित करने का भी प्रयास प्रस्तुत लेख में किया गया है।

कच्छ और आसपास में सिन्धु सभ्यता के पुरास्थल

सत्तर के दशक में कच्छ क्षेत्र में पुरातात्विक सर्वेक्षणों के फलस्वरूप बड़ी संख्या में हड़प्पाकालीन पुरास्थल प्रकाश में आये हैं। अभी तक 60 हड़प्पा सभ्यता से संबंधित पुरास्थलों की पहचान की गई है। इनमें 40 पुरास्थल प्रारम्भिक हड़प्पाकालीन हैं जबकि शेष उत्तरवर्ती हड़प्पाकाल से संबंधित हैं। प्रारम्भिक हड़प्पा काल के कुछ ही आवास

उत्तरवर्ती काल तक आवासित रहे हैं अन्यथा उत्तरवर्ती काल में अधिकतर नये आवास स्थापित किये गये थे (बिस्ट, 1989)। इन पुरास्थलों से जो इमारतों के अवशेष प्रकाश में आये हैं वह स्थानीय पत्थरों से बनाये गये थे । कच्छ में हड़प्पाकालीन पुरास्थलों का फैलाव बहुत रोचक है क्योंकि अधिकतर पुरास्थल बृहत् रण के दक्षिण–पूर्वी किनारे पर स्थित हैं जबकि छोटे रण के चारों ओर कई पुरास्थल प्रकाश में आये हैं। महत्वपूर्ण पहलू यह है कि अरब सागर एवं उत्तरी कच्छ की खाड़ी से लगी तटरेखा पर हड़प्पा संस्कृति के कोई भी पुरास्थल नहीं हैं। कुछ महत्वपूर्ण पुरास्थलों का संक्षिप्त विवरण निम्नलिखित है:

धोलावीरा

यह पुरास्थल हड़प्पाकालीन पुरास्थलों के पांच बड़े पुरास्थलों में शामिल है जो 100 हेक्टेयर से अधिक क्षेत्र में फैला है (बिस्ट, 1990) तथा इसे दक्षिण क्षेत्र की स्थानीय राजधानी का दर्जा दिया जाता है। यह कच्छ रण में स्थित खादिर बेट के पश्चिमी तट पर स्थित है। संपूर्ण नगर तीन भागों में विभाजित था जैसे दुर्ग क्षेत्र, मध्य एवं निम्न नगर जो अपने आप में हड़प्पा सभ्यता के लिये बिलकुल अनोखा है। सबसे रोचक खोज है दो स्टेडियमों की जो किसी भी हड़प्पा सभ्यता के पुरास्थलों से भिन्न हैं। यह अवशेष संकेत करते हैं कि खेलकूद एवं समुदायिक समारोहों के लिये सुनियोजित व्यवस्था थी जो वर्तमान गुजरात की संस्कृति का अभिन्न हिस्सा है। जल संरक्षण के अवशेष इस पुरास्थल की एक अन्य महत्वपूर्ण उपलब्धि हैं। संभवत: द्वीप पर स्थित होने के कारण पानी की अनुपलब्धता को देखकर वर्षा के जल संरक्षण पर बल दिया गया होगा। धोलावीरा एक सर्वाधिक सुनियोजित नगर था और उसकी कई विशेषतायें हैं। यह गुजरात का प्रागैतिहासिक काल का सबसे लम्बे समय 3200 से 1700 ईसा पूर्व तक आवासित नगर रहा है। उत्खनन के दौरान तीन प्राचीन भूकम्पों के अवशेष मिले हैं जिनके कालक्रम लगभग 2900, 2700 एवं 2100 ईसा पूर्व रहे होंगे (बिस्ट, 2011)।

सूरकोटडा

यह हड़प्पाकालीन नगर वर्तमान अडेसर के पास सुनवा गांव से लगभग 2 किलोमीटर पश्चिम में स्थित है। यहाँ से लगभग 5 किलोमीटर पूर्व में बड़े एवं छोटे रण को जोड़ने वाला चैनल है। आवास की मजबूती से किलेबन्दी की गई थी। इसके निर्माण में स्थानीय पत्थर का प्रयोग किया गया था। हड़प्पा सभ्यता के सभी लक्षण इसमें मौजूद हैं तथा इसकी रक्षा केन्द्र के रूप में पहचान की गई (जोशी, 1990)।

जुनी कुरण

पहले इसे कोटारा के नाम से जानते थे। यह पच्छम द्वीप के उत्तरी किनारे पर स्थित है जो रण से एक किलोमीटर से भी कम दूरी पर स्थित है। इस नगर की योजना धोलावीरा के समतुल्य है। इस किलेबन्द नगर में दुर्ग क्षेत्र और निम्न नगर के मध्य स्टेडियम स्थित है (प्रामाणिक, 2004)।

शिकारपुर

एक अन्य महत्वपूर्ण हड़प्पाकालीन नगर जो छोटे रण के उत्तरी तट पर स्थित है। इसका विस्तृत उत्खनन नहीं हुआ है लेकिन टीले की ऊँचाई को देखकर लगता है कि यह लम्बे समय तक आवासित रहा होगा।

बगसरा

हाल ही में महाराजा सयाजी यूनीवर्सिटी ने एक महत्वपूर्ण हड़प्पाकालीन पुरास्थल छोटे रण के दक्षिणी तट पर स्थित बगसरा गांव के समीप उत्खनन किया (सोनावाने आदि, 2003)। यह एक छोटा किलेबन्द नगर था और लगभग कच्छ की खाड़ी से एक किलोमीटर दूरी पर स्थित था। यह शेल उद्योग का प्रमुख केन्द्र था क्योंकि बड़ी मात्रा में शंख एवं उससे बनी वस्तुयें यहाँ पाई गई हैं।

रण के पूर्व की ओर के आवास

रण के पूर्व में बनास एवं उसकी सहायक नदियों के किनारे बड़ी संख्या में हड़प्पाकालीन पुरास्थलों की खोज की गई है। नागवाड़ा जो एक शेल उद्योग का केन्द्र था, का विस्तृत उत्खनन किया गया है (भान एवं गौड़ा, 2003)। कुछ अन्य पुरास्थलों जैसे जेखड़ा बेनाप वडगाम एवं रतनपुरा का छोटे स्तर पर उत्खनन किया गया है और इनके समुद्री गतिविधियों में शामिल होने के पर्याप्त प्रमाण हैं।

बड़े रण के उत्तर के पुरास्थल

कुछ हड़प्पाकालीन आवास रण के उत्तरी छोर पर स्थित हैं जिनमें कोट कोरी कुन्ज सूर एवं कोरोहियो पीर शामिल हैं। इन पुरास्थलों के अलावा कच्छ में बड़ी संख्या में हड़प्पा संस्कृति के पुरास्थल प्रकाश में आये हैं जो संकेत करते हैं कि तीसरी सहस्त्राब्दी ईसा पूर्व में कच्छ में जनसंख्या अन्य क्षेत्रों की तुलना में अधिक थी।

चर्चा

बड़ी मात्रा में हड़प्पाकालीन नगरों की कच्छ में उपस्थिति पर गंभीर विचार हुआ है। उन्नीसवीं सदी में ब्रिटिश सर्वेक्षकों ने कई तथ्यों का उल्लेख किया है जो इंगित करता है कि कच्छ रण की भौगोलिक स्थिति में काफी परिवर्तन आया है।

कच्छ एवं सौराष्ट्र में हड़प्पन स्थानान्तरण

साठ के दशक में रंगपुर एवं लोथल के उत्खननों से प्राप्त आंकड़े एवं कच्छ के हड़प्पा पुरास्थलों की जानकारी के अभाव में ऐसी धारणा व्यक्त कि गई थी सौराष्ट्र में हड़प्पन लोग समुद्री रास्ते से पहुंचे होंगे (राव, 1973)। लेकिन कच्छ में सूरकोटडा के उत्खनन एवं अन्य पुरास्थलों के प्रकाश में आने से यह धारणा व्यक्त की गई कि गुजरात में हड़प्पन लोग जमीन के रास्ते आये होंगे (जोशी, 1990)। लेकिन यह धारणा इस कल्पना को ध्यान में रख कर की गई कि वर्तमान स्थिति ही तीसरी सहस्त्राब्दी में भी रही होगी। जोशी का मानना है कि वर्तमान

जमीनी मार्ग हड़प्पा काल में भी रहा होगा और हड़प्पन लोग दक्षिण सिन्ध स्थित घारो भीरो से अल्लाहदिनो से जूनी कुरण तक आये होंगे और वहां से धोलावीरा और फिर पूरे कच्छ एवं सौराष्ट्र में फैले होंगे। लेकिन सूरकोटडा के उत्खनन के दौरान प्राप्त वनस्पतियों के अवशेष भिन्न जलवायु परिस्थितियों का संकेत करते हैं (मित्रे एवं सावित्री, 1978)। मेहर (2005) का मत है कि सिन्धु सभ्यता के लोग सिन्ध क्षेत्र से नदियों के जलमार्गों से आकर उथले सागर को पार कर सौराष्ट्र एवं कच्छ में फैले होंगे। ध्यान देने योग्य बात यह है कि सन् 1808 में कैप्टन ग्रेन्डले ने लखपत से तट्टा तक जलमार्ग द्वारा यात्रा की थी जो इस बात की पुष्टि करता है कि रण का कुछ पश्चिमी हिस्सा अठारहवीं-उन्नीसवीं सदी तक नौवहन योग्य था।

कच्छ में पुरातात्विक अनुसंधान से साफ तौर से यह तथ्य सामने आता है कि हड़प्पा काल में यहां एक संपन्न सभ्यता का विकास हो रहा था। यद्यपि सिन्धु सभ्यता कृषि प्रधान सभ्यता थी लेकिन कच्छ में उनका विस्तार कृषि भूमि का अधिग्रहण करना नहीं था क्योंकि यहां पर कृषि योग्य भूमि बहुत कम क्षेत्रों में है बल्कि अन्य प्राकृतिक संसाधनों का दोहन करना था, उदाहरण के तौर पर चूना पत्थर अगेट एवं समुद्री शैवाल जो इस क्षेत्र में अधिक मात्रा में मिलते हैं। हाल ही में एक महत्वपूर्ण अध्ययन में ला (2008) ने धारणा व्यक्त की है चूना पत्थर अगेट और शीशा इस क्षेत्र से पूरे हड़प्पा साम्राज्य के अन्य क्षेत्रों में भेजे जाते रहे होंगे। हड़प्पा एवं मोहनजोदड़ो से मिले बड़े आकार के गोल पत्थर रण में स्थित खादिर बेट से लाये गये जो केवल पानी के रास्ते से संभव है क्योंकि यह पत्थर 100 किलोग्राम से भी ज्यादा वजन के हैं।

क्या हड़प्पा काल में रण नौवाहन योग्य था?

यदि हड़प्पन लोगों को कच्छ क्षेत्र में कृषि मुख्य पहलू नहीं था तो कौन सा पहलू था जिसने हड़प्पन को कच्छ में आकर्षित किया। महत्वपूर्ण यह है कि अधिकतर पुरास्थल बड़े रण के दक्षिणी तट पर एवं छोटे रण के चारों ओर फैले हैं जबकि कच्छ खाड़ी के उत्तरी तट पर एक भी हड़प्पाकालीन पुरास्थल प्रकाश में नहीं आया है। यदि हम वर्तमान नगरों की तुलना करें तो देखते हैं कि माण्डवी मुंद्रा और काण्डला खाड़ी के उत्तरी तट पर स्थित है और रण के पास कोई भी बड़ा नगर नहीं है। इसका प्रमुख कारण यह है कि उत्पाद का निर्यात जलमार्ग से ज्यादा आसान है और इसीलिये यह सभी नगर तट के किनारे पर स्थित हैं। ऐतिहासिक संदर्भों को यदि हम देखें तो पेरी प्लस आफ इरिथ्रियन सी के लेखक ने रण को उथले पानी की खाड़ी कहा है जिसमें नौवहन कठिन है। इरफान हबीब (1982) ने अपनी पुस्तक एटलस आफ द मुगल इम्पायर में उल्लेख किया है कि नल सरोवर एवं छोटे रण के मध्य स्थित शाहपुर गांव नौका निर्माण का केन्द्र था जो यह दर्शाता है कि हाल की सदियों में काफी भौगोलिक स्थितियां परिवर्तित हुई हैं।

गुप्ता (1977) ने रेत जमाव की दर का अध्ययन किया है और संभावना व्यक्त की कि छोटे रण में 2 मिलीमीटर की दर से होलोसीन के दौरान जमाव हुआ है क्योंकि यहाँ भूकंप के कोई प्रमाण नहीं मिले हैं। इस प्रकार 2000 वर्ष पहले तक छोटा रण लगभग 4 मीटर गहरा रहा होगा। इसी प्रकार रेत के जमाव की दर बड़े रण में भी 500 वर्ष पूर्व तक जारी रही (खोड़े आदि, 2011)। मेहर (1995) का मानना है कि रण आफ कच्छ खंभात की खाड़ी से जुड़ा हुआ था। इस प्रकार दोनों

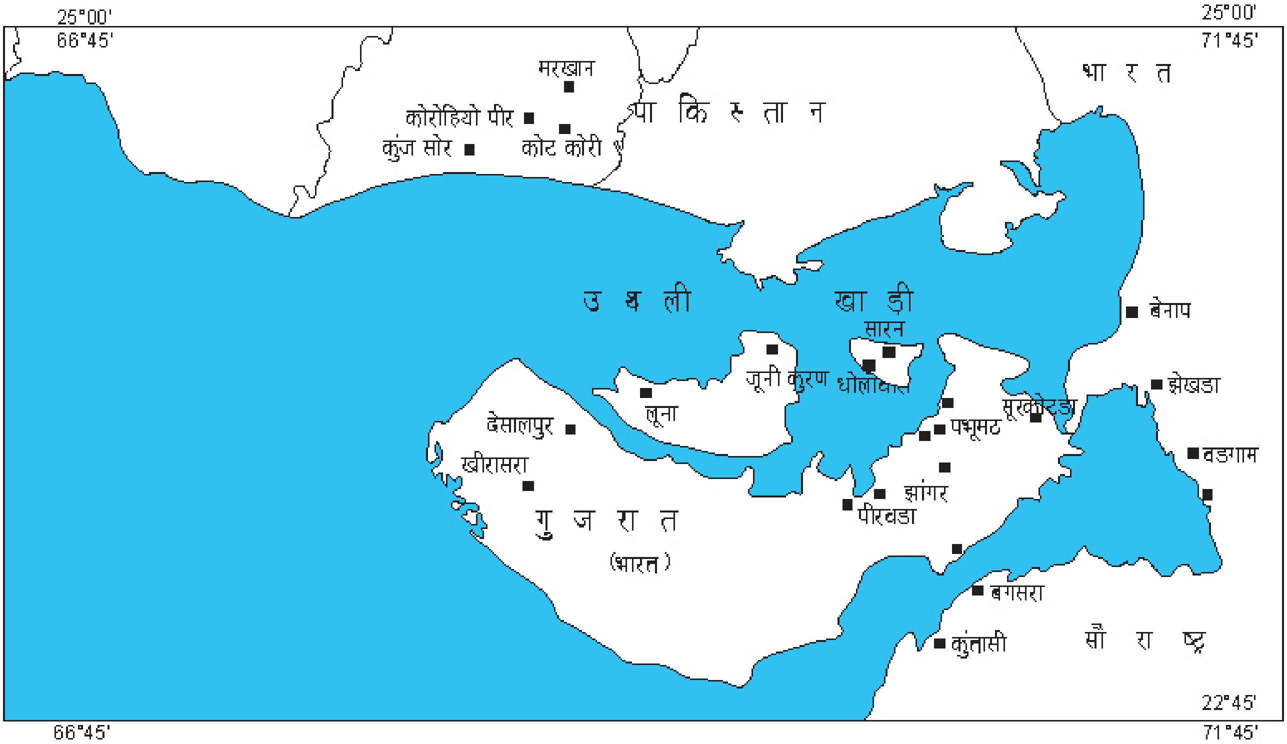

रण कच्छ एवं खंभात की खाड़ियाँ आपस में जुड़ी थीं और नौवहन के योग्य थीं। रण के उत्तर-पूर्व पर स्थित वीरावाव जो एक पुराना बन्दरगाह था, के बारे में फेरेरे (1870) ने एक रोचक कहानी का उल्लेख किया है ''लगभग 800 वर्ष पूर्व समुद्री जहाज वीरावाव तक आराम से आते थे तथा स्थानीय लोग उन पत्थरों के पोस्टों को दिखाते हैं जिन पर जहाजों को बांधा जाता था। स्थानीय व्यापारी यह भी बताते हैं कि रण में पानी कम होने के साथ लगभग 400 वर्ष पहले उनके समुदाय के लोग माण्डवी में बस गये थे। उस समय तक एक बन्दरगाह नगर के रूप में स्थापित हो चुका था।'' बर्न (1834) ने उल्लेख किया है कि नेरोना जो भुज से 30 किलोमीटर उत्तर-पश्चिम में रण के किनारे पर है, किसी समय बन्दरगाह था जो एक कविता के द्वारा उल्लेखित किया जाता है ''नैरोना नगरतुर जुधी गोन्तरी चित्राणो'' इसका मतलब यह है कि जब चित्राणों के गोन्तरी एक विकसित नगर था तब नेरोनो समुद्री बन्दरगाह था। नेरोना के पश्चिम में स्थित छारी में भी कुछ ऐसी ही परम्परा है। पच्छम् बेट के पश्चिमी किनारे पर स्थित दोरूत, दोह दोही एवं फंगवारू भी पुराने बन्दरगाहों के रूप में जाने जाते हैं। मैकमुर्दो (1815) ने मेमोयर आफ कट्टीवार में लिखा है ''रण समुद्र जैसा प्रतीत होता है जहां से हाल ही में पानी निकल गया है। रण के किनारे से ऐसे पत्थर मिले हैं जिन्हें कभी लंगर के रूप में प्रयोग किया जाता होगा, जिनमें रस्सी बांधने के लिये बड़े छिद्र हैं। रण के किनारों पर ऐसी पुरानी इमारतें हैं जिन्हें दान दारीस कहते हैं, इसका अर्थ है कि जहां पर कस्टम इकट्ठा किया जाता है। इसके अलावा खोड नामक गांव जो टीकर से 2 किलोमीटर पूर्व में है, एक बन्दरगाह था और वहां पर बड़ी-बड़ी नावें आती थीं। लगभग 50 वर्ष पूर्व बावड़ियों के पास 15 फीट मिट्टी में एक बड़े जहाज के अवशेष मिले जो संभवत: बारहवीं शताब्दी का रहा होगा।''

सिवेराईट ने 1907 में कच्छ का अरब इतिहासकारों द्वारा दिये गये विवरणों के आधार पर 712 ईस्वी का मानचित्र तैयार किया और इसके अनुसार समुद्र का तट उत्तर में देबाल तक फैला था जो वर्तमान में समुद्र तट से लगभग 50 किलोमीटर उत्तर में स्थित है। इससे यह सिद्ध होतो है कि भूतकाल में रण समुद्र का एक हिस्सा था और नौवाहन योग्य था।

उपसंहार

वर्तमान का सबसे कम जनसंख्या वाला क्षेत्र कच्छ हड़प्पा काल में काफी घनी आबादी वाला क्षेत्र रहा था। यद्यपि हड़प्पन सभ्यता कृषि प्रधान सभ्यता थी लेकिन उसका कच्छ में विस्तार व्यापारिक दृष्टि से किया गया होता। इसलिये यदि हम यह कहें कि यह लोग व्यवसायिक समुदाय के रहे होंगे तो इसमें कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। गुजरात में प्राकृतिक संसाधनों की उपलब्धता ने भी हड़प्पन को आकार्षित किया होगा। सिन्धु नदी ने सिन्ध एवं कच्छ के मध्य उपयोगी जलमार्ग की भूमिका निभाई होगी। उत्तरी तट पर स्थित हड़प्पन पुरास्थल कोट कोरी कुंज सूर एवं कोरोहियो पीर तथा दक्षिण में जुनी कुरण एवं धोलवीरा महत्वपूर्ण बन्दरगाह रहे होंगे। इस प्रकार तीसरी सहस्राब्दी के दौरान कच्छ की जलवायु एवं भौगोलिक परिस्थितियां वर्तमान से बिलकुल भिन्न रही होंगी। भौगोलिक अध्ययन इस बात का संकेत करते हैं कि सिन्धु नदी पश्चिम की ओर स्थानान्तरित हो गई है। पुरातात्विक एवं भौगोलिक अध्ययनों के आधार पर हम यह कह सकते हैं कि हड़प्पा काल में कच्छ रण समुद्र का एक हिस्सा था और पूर्ण रूप से नौवहन योग्य था।

संदर्भ

खोन्दे, एन.; मौर्य, डी.एम.; सिंह, ए.डी.; चौकसी, व्ही.एण्ड. चामयाल, एल.एस., 2011. इनविरोनमेन्टल सिग्नीफिकेन्स आफ रैज्ड रण सेडीमेन्ट्स, एलॉग द मार्जिनस् आफ खडीर भाजंदा एण्ड कुआर बेट आईलैण्ड इन ग्रेट रण आफ कच्छ, वेर्स्टन इण्डिया, करेन्ट साइंस, 101.11:429-34

गुप्ता, एस. के., 1977. होलोसीन सिल्टिंग इन द लिटिल रण आफ कच्छ, इकोलॉजी एण्ड आर्क्योलॉजी आफ वेस्टर्न इण्डिया (एडीटर्स: डी.पी. अग्रवाल एण्ड बी.एम. पाण्डे), कान्सेप्ट पब्लिशिंग कंपनी दिल्ली, पृष्ठ 201-205।

जोशी, जे.पी., 1990. एक्सकैवेशन एट सूरकोटडा 1971-72 एण्ड एक्सप्लोरेशन इन कच्छ, एमएएसआई, सं 87, आर्क्योलॉजिकल सर्वे आफ इण्डिया, न्यू दिल्ली।

पोशेल, जी.एस., 2002. द. इण्डस सिविलाइजेशन: ए कन्टेम्पोरारी पर्सपिक्टिव, रॉमन एण्ड लिटिलफील्ड पब्लिसरस, अल्तामिरा, प्रेस, वालनट क्रीक, यूएसए।

प्रामाणिक, एस., 2004. एक्सकैवेसन एट जूनी कुरण 2003-04: ए प्रिलिमिनरी रिपोर्ट, पुरातत्व 34:45-67।

फेरेरे, एच.बी.इ., 1870. नोटस् आन द रण आफ कच्छ एण्ड नेबरिंग रीजनस् जर्नल आफ द रॉयल ज्योग्राफिकल सोशयटी आफ लण्डन, 40:181-207।

बर्नस् ए., 1834. ट्रावेल इनटू बोखारा: बिइंग द एकाउंट आफ ए जर्नी फाम इण्डिया टू काबुल तारतरी एण्ड पर्शिया आल्सो नरैटिव आफ ए वायज आन द इण्डस् फ्राम द सी टू लाहोर, वॉल्यूम 3, जॉनमुरे अल्वेमारले स्ट्रीट, लण्डन, पृष्ठ 309-332।

बिस्ट, आर.एस., 1989. द हड़प्पन कोलोनाईजेशन आफ द कच्छ: एन एरगोनोमिक स्टडी विद रिफरेंस टू धोलावीरा एण्ड सूरकोटडा, हिस्ट्री एण्ड आर्टस् (एडिटर्स: कृष्ण देवा एल गोपाल एवं बी. सिंह), रामानन्द विद्या भवन, दिल्ली, पृष्ठ 265-272 ।

बिस्ट, आर.एस. 1990. धोलावीरा: न्यू हॉराईजनस आफ द इण्डस सिविलाईजेशन, पुरातत्व, 20:71-82

बिस्ट, आर.एस., 2011. मेजर अर्थक्वेक अकरेंस इन आर्क्योलॉजिकल स्ट्रेटा आफ हडप्पन सेटलमेन्ट एट धोलावीरा, कच्छ

गुजरात (अब्सट्रैक्ट) पेपर रेड इन ऐन इण्टरनेशनल सिम्पोजियम आन ''द 2001 भुज अर्थक्वेक एण्ड एडवांसेस इन अर्थ क्वेक साईस'' आन 22-24 जनवरी, 2011, गांधीनगर।

भान, के.के. एवं गौड़ा, डी., 2003. शेल वर्किंग एट नागवाड़ा नार्थ गुजरात विद रिफरेन्स टू शेल इण्डसट्रीज आफ द हरप्पन ट्रडीशन इन गुजरात, मैन एण्ड इनवरिोनमेन्ट, 28.2:51-80।

मेहर, एस.एस. 1995.ज्योलॉजी आफ गुजरात, ज्योलॉजिकल सोशाइटी आफ इण्डिया, बंगलौर।

मेहर, एस. एस., 2005. द ग्रेट रण आफ कच्छ परशेप्शन आफ ए फील्ड ज्योलॉजिस्ट, जर्नल आफ ज्योलॉजिकल सोसायटी आफ इण्डिया, 65.1:9-25।

मैकमुर्दो, जे., 1920. एन एकाउन्ट आफ द प्रोविनेन्स आफ कच्छ एण्ड आफ द कन्ट्रीज लाइंग बिटवीन गुजरात एण्ड द रिवर इण्डस, ट्रांजेक्शनस् आफ द लिटरैरी सोसायटी आफ बाम्बे, 2:204-241 लण्डन, लॉगमैन।

मित्रे, व्ही. एण्ड सावित्री, आर., 1978. सेतारिया इन द ऐंशियेन्ट प्लांट इकोनोमि आफ इण्डिया, पैलियोबॉटैनिस्ट, 25:559-652।

राव, एस.आर., 1973. लोथल एण्ड इण्डस सिविलाईजेशन, एशियन पब्लिशिंग हाउस, न्यूयार्क।

ला, आर.डब्ल्यू., 2008. इण्टर रीजनल इन्टरैक्शन एण्ड अर्बनिज्म इन द एन्शियेन्ट इण्डस वैली: ए ज्योलॉजिकली प्रोनिनेन्स स्टडी आफ हडप्पाज् रॉक एण्ड मिनरल असेम्बलेज, ए पीएचडी डिजर्टेशन, यनीवर्सिटी आफ विसकांसिन, मडीसन।

स्कॉफ, डब्ल्यू. एच., 1912 द पेरी प्लस आफ द इरिथ्रिनियन सी: ट्रावल एण्ड ट्रेड इन द इण्डियन ओशन बाई ए मर्चेन्ट आफ द फर्स्ट सेन्चुरी, लॉगमन्स् ग्रीन्स्एण्ड कं न्यूयार्क, रीप्रिन्टेड इन 1974 बाय ओरियंटल बुक्स रीप्रिन्ट कारपोरेशन, दिल्ली।

सिवेराईट, आर., 1907/ कच्छ एण्ड द रण, द ज्योग्राफिकल जॉर्नल, 29.5:518-535।

सोनावाने, व्ही.एच.; अजितप्रसाद, पी.; भान, के.के.; कृष्णन. के.; प्रतापचन्द्रन, एस.; मजूमदार,ए.; पटेल, ए.के.; मेनन, हबीब, आई., 1982. एटलस आफ द मुगल इम्पायर, आक्सफोर्ड यूनीवर्सिटी प्रेस, दिल्ली।